कविता / तब तुम क्या करोगे

अमनप्रीत विद्यार्थी

जब तुम्हें गाँव से बाहर निकाल दिया जाए
और बसा दिया जाए गाँव के अंदर गाँव
जहाँ न तुम्हे खेतों में घुसने दिया जाए
न तुम्हे अपने काम का मेहनताना दिया जाए
तब तुम क्या करोगे ?

जब तुम्हारी आजादी चौधरियों की कोठियों में कैद हों
तुम्हारे सारे हक-अधिकार छीन लिए गये हों
तब तुम क्या करोगे ?

रुपए देने के बावजूद
जब नाई बाल काटने से मना कर दे
दूधिया दूध देने से मना कर दे
दुकानदार राशन देने से मना कर दे
तब तुम क्या करोगे ?

जब तुम्हारे बच्चे भूख के मारे रोते बिलखते हो
भेड़-बकरियाँ चराने के लिए चारा न हो
स्कूल में तुम्हारे बच्चों को बैठने न दिया जाए
तब तुम क्या करोगे ?

जब कर दिया जाए ऐलान
गाँव में हुक्का पानी बंद करने का
तुम्हारे दलित होने के कारण
तब तुम क्या करोगे ?

जब तुम्हारी सरेआम इज्जत उछाली जाए
तुम्हारी औरतों को अपनी हवश का
शिकार बनाया जाए
तब तुम क्या करोगे ?

शिक्षित बनोगे ?
एकजुट होओगे ?
संघर्ष करोगे ?

या फिर
चुपचाप सहते रहोगे ?

(हरियाणा के जींद जिले के छातर गाँव में दलितों पर लगाए गए सामाजिक बहिष्कार पर)

कहानियों में जीना-मरना

कहानी के पीछे पगलाए घूमना हर किसी के मिजाज में नहीं होता। न जाने कितनी बार मैंने अपने भाइयों के पैर दबाए, उनसे किसी फिल्म की कहानी सुनने के लिए। गर्मी की दुपहरियों में घंटों लुरखुर काका की गाय-भैंसों पर नजर रखी ताकि लोरिक-संवरू और दयाराम ग्वाल के पंवारे सुनाते हुए उनकी कल्पना और लयकारी में कोई खलल न पड़े। अकबर-बीरबल, शीत-बसंत और राजा भरथरी के किस्से चिथरू चाचा से सुनने के लिए जाड़ों की शाम सूरज झुकने के भी घंटा भर पहले मैं उनके दरवाजे पर हाजिरी लगा देता था।

उनके कई सारे काम तब अधबीच में होते थे और वहां मेरी असमय उपस्थिति से परेशान उनके घर वाले हिकारत से मुझे देखकर मुंह बिचका देते थे। फिर उपन्यास पढ़ने की उम्र हुई तो इसके लिए बड़ों की निर्लज्ज चापलूसी, यहां तक कि चोरी-चकारी जैसा कर्म भी मुझे कभी अटपटा नहीं लगा। कहानियों के पीछे इस दीवानगी की एक बड़ी वजह अपने परिवेश से अलगाव और मन पर छाए गहरे अकेलेपन से जुड़ी हो सकती है। लेकिन बाद में लगा कि यह कोई वैसी अनोखी बात नहीं है, जैसी शुरू में मुझे लगा करती थी।

किसी मुश्किल से मुश्किल बात को भी अगर कहानी की तरह सुनाया जा सके तो इससे दो नतीजे निकलते हैं। एक यह कि सुनाने वाला बात को अच्छी तरह समझ गया है। दूसरा यह कि जिसे सुनाई जा रही है, बात का काफी हिस्सा उसकी समझ में आ जाएगा। झूठ और गप्प से घिरे हुए इस समय में ज्यादातर लोग बातों को समझ लेने का ढोंग भर करते हैं। तकनीकी जुमलेबाजी से भरी बातें अक्सर बताई भी इसीलिए जाती हैं कि लोग उन्हें न समझें और ऊबकर या नासमझ मान लिए जाने के डर से मुंडी हिलाकर छुट्टी पा लें। और तो और, काफी सारे साहित्यिक कथ्य पर भी यह बात लागू होती है!

कुछ समय पहले एक थ्रिलर से गुजरते वक्त उसमें आए इस वाक्य पर नजर अटक गई- 'हम कहानियों के लिए जीते हैं, कहानियों के लिए ही मरते हैं।' क्या सचमुच? तनख्वाह में हर पांचवें साल एक नया जीरो जोड़ते हुए आगे बढ़ने वाले एक कामयाब परिचित से न जाने किस रौ में एक दिन अचानक मैंने पूछ लिया, 'तुम्हारे बच्चे कभी तुमसे तुम्हारी कहानी सुनना चाहेंगे तो उन्हें क्या सुनाओगे? यही कि क्या-क्या किया तो सैलरी कितनी बढ़ गई?'

यकीनन मेरे इस सवाल में अजनबियत भरी थी। कहानियां उसके पास थीं। बस, जिंदगी की चूहा-दौड़ में शामिल हो जाने के बाद उन्हें पलट कर याद करने का मौका उसको एक जमाने से नहीं मिला था। उस चढ़ती रात में हम देर तक बतियाते रहे। पढ़ाई पूरी करने के बाद तीन साल लंबी उसकी भटकन के किस्सों ने हमारे बीच के अंधेरे कोने को चमकते जुगनुओं से भरी हुई झाड़ी जैसा बना दिया। लगा कि एक लंबी कहानी के नगण्य पात्र ही हैं हम। बस सुनाए जाने की देर है।

- साइबर नजर

अमेरिका और कैनेडा के बॉर्डर पर एक भी सैनिक नहीं है

यूरोपियन यूनियन के देशों में अनेकों मकान ऐसे हैं जिनका एक हिस्सा एक देश में तो दूसरा दूसरे... इसी तरह सोते वक्त सर कनाडा में तो पाँव अमेरिका। इसी प्रकार ड्राइंग रूम फ्रांस में तो किचन जर्मनी में... यूरोप अपनी पुरानी दुश्मनी भुला कर एक हो चुका है । वही साउथ एशिया यानी अखंड भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश के बॉर्डर के चप्पे-चप्पे पर सैनिक या अर्ध सैनिक तैनात है, पूरा बॉर्डर कटीली तारों से कवर है ।

भारत पाकिस्तान के बीच पिछले 10 सालों से घोषित और अघोषित युद्ध चल रहा है । सत्ता की भूख की वजह से हुए भारत पाकिस्तान के बटवारे में कश्मीर गले की हड्डी के रूप में फस गया । कश्मीर के नाम पर चलने वाले इस अघोषित युद्ध पर जितना धन व्यय हुआ है , यदि वो इस अखंड भारत की जनता के स्वास्थ्य शिक्षा और कुपोषण की समस्या को खत्म करने पे खर्च किया जाता तो शायद ही इस क्षेत्र में गरीबी का नामों निशान बचता। पर ऐसा लगता कि भारतीय उपमहाद्वीप की दोनों देशों की सरकारें कश्मीर के मुद्दे पर उलझा कर जनता का ध्यान मूल मुद्दों से भटकाने का प्रयास कर रही है । ऐसे में सीमा एस पार और उस पार बसे नागरिकों का कर्तव्य है कि अपने अपने देशों की सरकारों पर दबाव बनाये कि अब युद्ध नहीं शांति चाहिए ।

युद्ध, युद्ध की तैयारी, युद्ध सामग्री खरीदने के लिए होने वाला समस्त व्यय अंततः जनता को ही टैक्स के माध्यम से चुकाना पड़ता है। जबकि इस 'देश भक्ति' के मुद्दे की तरफ भटका कर राजनेता जनता का ध्यान जनता के मूल मुद्दों से भटका चुके होते है । सीमा के इस पार और उस पार के लोग एक दूसरे को दुश्मन समझने लगते हैं।

सीमा के दोनों तरफ की जनता का एक साँझा दुश्मन है, और वो है इन दोनों क्षेत्र के राजनेताओं की वो नीतियाँ जिसकी वजह से सीमा के दोनों पार सभी बच्चों को सार्वजानिक धन से पोषित सामान स्कूली शिक्षा नहीं मिल पाती , सीमा के दोनों पार के लोगो को सार्वजानिक स्वास्थ्य की सुविधा नहीं मिल पाती , सीमा के दोनों पार के लोग कुपोषण के शिकार हैं, सीमा के दोनों तरफ के लोग गरीबी से पीड़ित, सीमा के दोनों पार के लोग कुशिक्षा , कुस्वास्थ्य , कुपोषण से पीड़ित!

सीमा के दोनों तरफ की सरकार जो धन शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण एवं अन्य नागरिक सुविधावों पर खर्च करना चाहिए वो धन युद्ध, युद्ध की तैयारी, युद्ध की सामग्री खरीदने पर खर्च करती हैं । सीमा के इस पार और उस पार के राजनेताओं का इलाज विदेशों में होता है । दोनों के बैक अकाउंट स्विसबैंक में मिल जायेगे । यानी एक दूसरे के विरोधी होने के बाद भी बहुत सी समानता है । और एक दूसरे के शत्रु मान बैठा आम नागरिक एक जैसी सामान समस्या गरीबी, गैर बराबरी, अशिक्षा, कुपोषण, स्वास्थ्य के अभाव से पीड़ित है । जब तक युद्ध रहेगा, सुरक्षा के नाम पर हर सरकार युद्ध सामग्री खरीदने पर खर्च खर्च करती रहेगी ।

किसी भी अर्थव्यवस्था के पास असीमित संसाधन (धन) नहीं होता । यदि सरकार धन युद्ध सामग्री खरीदने पर खर्च करती है तो सीमा के दोनों पार के जन के आम शत्रु यानी 'गरीबी, गैर बराबरी, अशिक्षा, कुपोषण, स्वास्थ्य सुविधावों का आभाव' के लिए संसाधन (धन) बचेगे ही नहीं । और युद्ध जनता को अपने साँझा दुश्मन से भटकाये रखने का साधन रहेगा। अतः आज जरूरी है कि सीमा के इस पार और सीमा के उस पार के जन एक जुट हो अपने अपने देशों की सरकारों पर दबाव बनायें कि युद्ध नहीं चाहिए, 'गरीबी, गैर बराबरी, अशिक्षा, कुपोषण, स्वास्थ्य सुविधावों का आभाव' से मुक्ति चाहिए ।

ऐसी मांग सीमा के इस पार और उस पार के साँझा नागरिक संगठनों के प्रयास से ही संभव है । एक तरफा मांग घातक है... अतः हमें ज्यादा से ज्यादा नागरिक संवादों को बढ़ावा देना होगा.....।

युद्ध हमेशा से पूंजीपतियों के पक्ष में होता है... पहले युद्ध की तैयारी के नाम पर संसाधनों को युद्ध सामग्री खरीदने पर खर्च किया जाता है... जिसका फायदा इसे बनाने से लेकर इसकी दलाली में लगे सटोरियों को होता है... गलती से युद्ध हो जाये तो सट्टे बाज जरूरी सामानों के रेट दुगने तिगुने नहीं दस गुने तक कर देते हैं...यानि फायदा ही फायदा... चुकीं सुरक्षा से बड़ा कोई मुद्दा नहीं. और सारे संसाधन युद्ध के नाम पर बहा दिए जाते है... अतः अब जहा तक आम जनता की बात उसके स्वास्थ्य, शिक्षा आदि विषयों पर खर्च करने के लिए संसाधन ही नहीं बचते....युद्ध में सैनिक भी किसान और मजदूरों की ही संताने ..... प्रथम विश्वयुद्ध से सीरिया युद्ध तक...युद्ध के नाम पर जो राजनीति होती है उससे मालामाल देशी विदेशी पूंजीपति, नेता (दलाली उन्हें भी जाती है) ... पिसते सीमा के इस और उस पार के आम जन ही..... युद्ध समस्या का समाधान नहीं।

- साइबर नजर

प्रेरणा / संघर्ष और सफलता

कोलंबा कालीधर

पिकासो (Picasso) स्पेन में जन्मे एक अति प्रसिद्ध चित्रकार थे। उनकी पेंटिंग्स दुनिया भर में करोड़ों और अरबों रुपयों में बिका करती थीं...!!

एक दिन रास्ते से गुजरते समय एक महिला की नजर पिकासो पर पड़ी और संयोग से उस महिला ने उन्हें पहचान लिया। वह दौड़ी हुई उनके पास आयी और बोली, 'सर, मैं आपकी बहुत बड़ी फैन हूँ। आपकी पेंटिंग्स मुझे बहुत ज्यादा पसंद हैं। क्या आप मेरे लिए भी एक पेंटिंग बनायेंगे...!!?'

पिकासो हँसते हुए बोले, 'मैं यहाँ खाली हाथ हूँ। मेरे पास कुछ भी नहीं है। मैं फिर कभी आपके लिए एक पेंटिंग बना दूंगा..!!'

लेकिन उस महिला ने भी जिद पकड़ ली, 'मुझे अभी एक पेंटिंग बना दीजिये, बाद में पता नहीं मैं आपसे मिल पाऊँगी या नहीं।'

पिकासो ने जेब से एक छोटा सा कागज निकाला और अपने पेन से उसपर कुछ बनाने लगे। करीब 10 सेकेण्ड के अंदर पिकासो ने पेंटिंग बनायीं और कहा, 'यह लो, यह मिलियन डॉलर की पेंटिंग है।'

महिला को बड़ा अजीब लगा कि पिकासो ने बस 10 सेकेण्ड में जल्दी से एक काम चलाऊ पेंटिंग बना दी है और बोल रहे हैं कि मिलियन डॉलर की पेंटिग है। उसने वह पेंटिंग ली और बिना कुछ बोले अपने घर आ गयी..!!

उसे लगा पिकासो उसको पागल बना रहा है। वह बाजार गयी और उस पेंटिंग की कीमत पता की। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह पेंटिंग वास्तव में मिलियन डॉलर की थी...!!

वह भागी-भागी एक बार फिर पिकासो के पास आयी और बोली, 'सर आपने बिलकुल सही कहा था। यह तो मिलियन डॉलर की ही पेंटिंग है।'

पिकासो ने हँसते हुए कहा,'मैंने तो आपसे पहले ही कहा था।'

वह महिला बोली, 'सर, आप मुझे अपनी स्टूडेंट बना लीजिये और मुझे भी पेंटिंग बनानी सिखा दीजिये। जैसे आपने 10 सेकेण्ड में मिलियन डॉलर की पेंटिंग बना दी, वैसे ही मैं भी 10 सेकेण्ड में न सही, 10 मिनट में ही अच्छी पेंटिंग बना सकूँ, मुझे ऐसा बना दीजिये। 'पिकासो ने हँसते हुए कहा, 'यह पेंटिंग, जो मैंने 10 सेकेण्ड में बनायी है...इसे सीखने में मुझे 30 साल का समय लगा है। मैंने अपने जीवन के 30 साल सीखने में दिए हैं..!! तुम भी दो, सीख जाओगी..!!

वह महिला अवाक् और निःशब्द होकर पिकासो को देखती रह गयी...!!

दोस्तो, जब हम दूसरों को सफल होता देखते हैं, तो हमें यह सब बड़ा आसान लगता है...!!हम कहते हैं, यह इंसान तो बड़ी जल्दी और बड़ी आसानी से सफल हो गया....!!!लेकिन उस एक सफलता के पीछे कितने वर्षों की मेहनत छिपी है, यह कोई नहीं देख पाता....!!!

सफलता तो बड़ी आसानी से मिल जाती है, शर्त यह है कि सफलता की तैयारी में अपना जीवन कुर्बान करना होता है...!!

जो खुद को तपा कर, संघर्ष कर अनुभव हासिल करता है, वह कामयाब हो जाता है लेकिन दूसरों को लगता है कि वह कितनी आसानी से सफल हो गया...!!

परीक्षा तो केवल 3 घंटे की होती है,लेकिन उन 3 घण्टों के लिए पूरे साल तैयारी करनी पड़ती है तो फिर आप रातों-रात सफल होने का सपना कैसे देख सकते हो...!!? सफलता अनुभव और संघर्ष मांगती है और, अगर आप देने को तैयार हैं, तो आपको आगे जाने से कोई नहीं रोक सकता....!!